ISSN No. 2349-4654
नाद - नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक वर्ष : 1, अंक : 2, दिसम्बर 2014

मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर में ध्रुवपद गायन शैली

प्रो. शर्मिला टेलर
संगीत विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान

कामना सिसोदिया
शोधार्थी, संगीत विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान

सार-संक्षेप

मध्यप्रदेश नाम से ही स्पष्ट है कि यह भारत के मध्य में स्थित है। इस प्रदेश में ध्रुपद को राजकीय संरक्षण मिला। इन्दौर, ग्वालियर, देवारा, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर ऐसे स्थल रहे हैं जहाँ ध्रुपद गायकों ने इस शैली को उच्च स्थान दिलाया। केवल गायकों ने ही ध्रुपद को समृद्ध नहीं बनाया बल्कि बीन वादकों तथा पखावज वादकों ने भी इसे विशिष्ट स्थान दिलवाया है। तानसेन जैसे प्रसिद्ध गायक ने भी अपनी संगीत मध्यप्रदेश में की थी। राजा मानसिंह तोमर जैसे राजा ने तो इस विधा को परिष्कृत करके इसका उद्धर्वीकरण कर दिया। प्रस्तुत शोध-पत्र में मध्यप्रदेश में ध्रुपद के विकास क्रम को दर्शाते हुए वर्तमान समय में प्रचलित ध्रुपद गायकों द्वारा इसके संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के प्रयोगों को विस्तार से बतलाया है। इस पत्र को लिखने के लिए मैंने माध्यमिक स्रोतों से सहायता ली है।

शोध-पत्र

भारतीय शास्त्रीय संगीत की आत्मा राग है। एक राग केवल रचनाओं के माध्यम से पूरी तरह समझा जा सकता हैं। रचनाओं से ही राग का रूप मजबूत बनता है। ध्रुवपद एक ऐसी विधा है जो 15 वीं सदी से लोकप्रिय हुई। 'ध्रुपद' शब्द संस्कृत के 'ध्रुवपद' से बना जिसका व्युत्पत्तिशास्त्र संबंध, 'ध्रुव' व 'पद' से मिलकर बना। जिसमें 'ध्रुव' का संरचित अर्थ एक संयोजन और पद सूचित करना व रचना के साहित्य को शब्द या शब्दांश का प्रतीक करने के लिए होता है।

मध्यप्रदेश को भारत का हृदय कहा जाता है। मध्यप्रदेश की धरती पर कला, संस्कृति और साहित्य का बीजारोपण मानव समाज के विकास के साथ-साथ पुष्पित, पल्लवित होता चला गया। अनादिकाल से मध्यप्रदेश कला और संस्कृति का केन्द्र रहा है। मध्यप्रदेश देश में अपने मध्यवर्ती स्थान के साथ अपनी सांस्कृतिक समृद्धि के लिए भी भारत के हृदय के रूप में जाना जाता है। ग्वालियर को भारतीय संगीत के महत्वपूर्ण केन्द्रों में से एक माना गया है। मध्यप्रदेश में इन्दौर, ग्वालियर, देवास, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर आदि जिलों में ध्रुवपद गायकों , बीन, पखावज वादकों का निवास रहा है। मध्यप्रदेश एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक संगीत राज्य इसलिए है कि इस प्रदेश की उर्वरा भूमि में न केवल साहित्य और कला के महान कलाकार उत्पन्न हुए बल्कि तानसेन जैसे महान संगीतज्ञ तथा संसार प्रसिद्ध गायकों को भी इस प्रदेश मे अपनी संगीत साधना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ध्रुवपद शैली के विकास का मुख्य केन्द्र 'ग्वालियर' बना। ध्रुवपद शैली के नवनिर्माण में ग्वालियर के तोमर वंशीय राजा मानसिंह का विशिष्ट स्थान है। राजा मानसिंह ने भारतीय संगीत का परिवर्तन एवं उद्धर्वीकरण करते हुए उसे एक अविरल धारा के रूप में स्थापित किया एवं संगीत की एक ऐसी नवीन ध्रुवपद शैली का परिष्कार किया। ''1486 ई. से 1516 ई. के 30 वर्षो के राज्यकाल में विषम वातावरण से आच्छादित राजनीतिक जीवन में भी उन्होंने भारतीय संगीत की आधारभूत गायकी 'ध्रुवपद को लोकप्रिय बनाया और उसका प्रचार-प्रसार किया।''[1] सुप्रसिद्ध बैजू, बख्शू, चरजू, धोंडू और गोपाल जैसी विभूतियाँ मानसिंह तोमर के दरबारी संगीतज्ञ थे। ''मानसिंह ने विष्णुपदों के रूप में भक्तिपरक पदों की रचना कराई फलत: जयदेव और विद्यापति की शैली पुष्टि मार्ग के अष्टछाप के गेय पदों के रूप में उभरी और श्रृंगारपरक 'ध्रुवपद' ब्रजभाषा के माध्यम से ग़ज़लों के जवाब में उभरे।''[2] इन्होंने जनसामान्य के प्रचार-प्रसार हेतु ब्रजभाषा में ध्रुपदों की रचना करवाई। इनके दरबारी गायक बैजू, बख्शू, नायक पांडवी लोहंग तथा महम्मद आदि के सहयोग से 'मानकुतूहल' ग्रन्थ की रचना की गई। बैजू ने राग गूजरी तोड़ी, मंगल गूजरी, मालगूजरी, बहुल गूजरी इत्यादि रागों की रचना की। इनकी रचनाओं और भाषा को देखते हुए उनकी विद्वता का ज्ञात होता है। बैजू द्वारा रचित पद इस प्रकार है—

(राग भैरव, चौताल)

''प्रथम नाम गनेस को लिजिये,
जा सुमिरें हयिं सिद्ध काम
जय गिरिजानंदन जगवंदन लम्बोदर,
तोही जपत आवै रिद्धि-सिद्धि, होय सुख धाम॥
अष्ट सिद्धि नव निधि पावै सुख विश्राम।
कहे 'बैजू बावरा' निसदिन सुमिरो
नाद वाद्य प्राप्त हयिं लियें नाम होय॥''[3]

बख्शू राजा मानसिंह तोमर के दरबारी गायक थे तथा अपने समय के सर्वश्रेष्ठ ध्रुपदकार हुए। शाहजहाँ को बख्शू की ध्रुवपद रचनाएँ इतनी पसंद आई की उन्होंने 1000 ध्रुवपदों का संग्रह 'सहसरस' नाम से बनवाया। 'सहसरस' के पद ध्रुवपद शैली के हैं। यह पद विषमता के

उत्कृष्ट उदाहरण हैं। 'सहसरस' मे वर्णित बख्शू के ध्रुवपद का संकलन चार राग और छियालिस रागिनी के अन्तर्गत हुआ है तथा इन पदों में दस ताल प्रयुक्त हुई है। स्वामी हरिदास जी भक्तिपरक ध्रुवपद गाते थे तथा इनकी रचनाओं में होरी तथा रास, राधा-कृष्ण के युगल रूप, नृत्य-विहार आदि विषय उपलब्ध होते हैं। ''स्वामी हरिदास ने सिद्धान्त के 18 और शृंगार के 110 इस प्रकार कुल 128 पदों की रचना की। उनके अधिकांश पदों में 'श्री हरिदास के स्वामी श्यामा कुंज बिहारी' यह छाप मिलती है, पर कुछ पद इस छाप के बिना भी है। शृंगार के पद 'श्री केलिमाल' नाम से संग्रहित है।''[4] ध्रुवपद गायन शैली के विकास क्षेत्र में तानसेन की देन अद्वितीय है। तानसेन गोबरहार या गोड़हार बानी के निर्माता व अनुसरणकर्ता थे। वे रस - अलंकार, नायक-नायिका इत्यादि भेदों से भली-भाँति परिचित थे तथा इनके ध्रुवपदों में प्रताप वर्णन, वैराग्य, सूफियों की स्तुति आदि प्राप्त होती है। तानसेन ने दो हजार से भी अधिक ध्रुवपदों की रचना की है। इनकी दृष्टि में ''ध्रुवपद की चार तुके होनी चाहिए, उसे शुद्ध अक्षरों से युक्त अच्छे गुरूओं के शिष्यों रस से सम्बद्ध सामंजस्यपूर्ण होना चाहिए।[5] तानसेन द्वारा रचित एक पद में चारों बानियों के नाम इस प्रकार है—गोबरहार, खंडार, डागुर तथा नौहार अर्थात् गोबरहार बानी को राजा की उपाधि, खंडार को फौजदार की, डागुर की दीवान की तथा नौहार को बकसी की उपाधि मिली है। पंचम को अचल स्वर और रिषभ, मध्यम, धैवत, निषाद तथा गंधार को चल स्वर माना गया है। मूर्च्छना की संख्या इक्कीस, श्रुति की बाईस, कूटतान की संख्या उनचास होती है। इन सभी गुणों से युक्त पद इस प्रकार हैं—

''बानी चारों के ब्यौहार सुनि लीजै हो गुनीजन,
तक पावैस विद्या सार।
राजा गुबरहार, फौजदार खंडार,
दीवान डागुर, बकसी नौहार।।
अचल सुर पंचम, चल सुर रिषभ,
मध्यम, धैवत, निषाद, गंधार।
सप्त तान, इकईस, मूर्छना, बाईस, सुरति,
उनचास कूट तान, 'तानसेन' आधार।।''[6]

उपर्युक्त पद से ज्ञात होता है कि मध्य काल में ध्रुवपद की चार बानियाँ थी। गोबरहार बानी की उत्पत्ति ग्वालियर से हुई है। 'मियाँ तानसेन की ध्रुवपद पद्धति के हिसाब से इस बानी को बहुत सुरीले ढंग से और सच्चे स्वरों में गाया जाता है और इसमें मींड का प्रयोग अधिक होता है।'[7] इस वाणी की पंक्तियों की तुलना में शब्द संख्या कम होने के कारण इसमें दो अक्षर या पदों के बीच के अन्तर को मींड या आस से भरा जाता है। यह वाणी शांत, शृंगार, करुण एवं वीर रस प्रधान होती है। अधिकतर शान्त, वीर व शृंगार रस के ध्रुवपद मिलते हैं जो प्रचलित व अप्रचलित तालों में निबद्ध होते हैं। यह ध्रुवपद अधिकतर चौताल, शिखरताल, ब्रह्म आदि तालों में मिलते हैं। डागुर वाणी के प्रवर्तक अकबरी दरबार गायक श्री ब्रज चंद ब्राह्मण जो डागुर गाँव के निवासी थे, को माना गया हैं। इस वाणी में ध्रुवपद में शब्दों की अधिकता होने के कारण आस व मींड का काम होता है और विलम्बित एवं मध्य दोनों लय में गाये जाते हैं। इस वाणी की प्रारंभिक अवस्था में दुगुन, चौगुन, आड़, कुआड़, बिहाड़ आदि लयकारियां नहीं की जाती थी, केवल अतीत, अनागत या दुगुन तक ही यह वाणी गाई जाती थी। बाद में 'लयकारी' में लयबांट का प्रयोग होने लगा। स्वामी हरिदास भी इस वाणी का प्रयोग करते थे। वर्तमान में डागर परम्परा के गुणीजनों ने ध्रुवपद के प्रचार-प्रसार का बीड़ा सम्भाला है। 'खण्डार नामक स्थान पर एक दुर्ग भी था। इस पर बाबर के आक्रमण के समय राणा सांगा ने अधिकार किया था। इस स्थान के निवासियों की भाषा का 'खण्डारी' वाणी होना संभव है।'[8] वीरतापूर्ण होने के कारण यह गमकप्रधान वाणी है। इसमें मध्यद्रुत व द्रुतलय मिलती है। गमक का प्रयोग होने से मात्राएँ खण्ड-खण्ड मालूम पड़ती है। एक ध्रुवपद में केवल चार पंक्तियाँ रहने के कारण द्रुतलय में गाते समय यह बहुत शीघ्र समाप्त हो जाता है। यह वाणी वीर एवं अद्‌भुत रस से प्रधान है। इस वाणी में स्वरों को सरल भाव से व्यक्त न करके खण्ड-खण्ड गाने के कारण इस का नाम खण्डार पड़ा। ध्रुवपद की नौहार वाणी का अर्थ 'सिंह' के समान आवाज निकालते हुए या गर्जना करते हुए गाने की शैली से है। इस वाणी की बंदिशों में विलम्बित लय का प्रयोग बहुत कम है। मध्य या मध्य-द्रुत लय इस वाणी के लिए उपयुक्त है। इस वाणी में डागर वाणी की अपेक्षा अधिक परिमाण में अलंकार प्रयोग होता है। इसमें मींड, आस, ज़मज़मा, गमक एवं छूट इत्यादि अलंकारों का अधिक व्यवहार है इसलिए इसमें शांत और करुण रस उपयुक्त नहीं है। अतिविलम्बित लय में चौगुन, अठगुन, आड़ी-फिरत के साथ लय में बंधी तानों और बोल तानों का प्रयोग होता है। ''इक्का, लहक, दहक, दुरन-मुरन, हिला-डलुला, शेरों जैसी आवाज और ताल प्रधान मधुर प्रदर्शन इस बानी की विशेषता मानी जाती है।''[9] ध्रुवपद की इन बानियों के अध्ययन से इनके विधि-विधान तथा उनमें प्रयुक्त तकनीक व ध्रुवपद गायन की विशेषता का बोध होता है।

प्राचीनकाल से ही मध्यप्रदेश एक धर्मप्रधान प्रदेश रहा है तथा मंदिरों में संगीत का विशेष महत्व है। अर्थात ध्रुवपद शैली के प्रचार-प्रसार में मन्दिरों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मध्यप्रदेश में आज भी कई मन्दिरों में ध्रुवपद गायन द्वारा भगवान की पूजा-अर्चना होती है। इन्दौर के श्रीनाथ जी का मंदिर, मदनमोहन जी का मंदिर, उज्जैन में श्रीनाथ जी का मंदिर, पुरूषोत्तम जी का मंदिर, जनार्दन मंदिर, गोवर्द्धननाथ जी का मंदिर आदि जगहों पर नियमित ध्रुवपद गायन होता है। मध्यप्रदेश में ध्रुवपद शैली को आज तक पूर्ण रूप से जीवित रखने का श्रेय मंदिरों को जाता है। मध्यप्रदेश के राजदरबारों में संगीतकला को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। उज्जैन में श्री तातु भैया अपने समय के श्रेष्ठ ध्रुवपद गायक थे। इनके पिता श्री गोविन्द बुवा हरिदास थे। जिनको सैकड़ो ध्रुवपद कंठस्थ थे तथा ऐसा कहा जाता है कि इनके पास लगभग 10,000 ध्रुवपद संग्रहित थे। श्रीतातुभैया स्वामी हरिदास की परम्परा से संबंध रखते थे। मध्यप्रदेश के इन्दौर क्षेत्र में श्रीमन्त तुकोजीराव होलकर, उस्ताद नसीरूद्दीन खां, केशवरावआप्टे , पं. रमाशंकर शुक्ल, केशवनारायण आप्टे आदि अपने समय के सर्वश्रेष्ठ गायक थे। उस्ताद नसीरूद्दीन खाँ

महाराजा तुकोजीराव होल्कर इन्दौर के दरबारी संगीतज्ञ थे। इनके पुत्र नसीरमोइनुद्दीन, अमीनुद्दीन, जहीरूद्दीन और फैयाजुद्दीन अपने नाम के आगे 'डागर' लगाते थे तथा इन्हीं डागर बंधुओं ने आज ध्रुवपद शैली को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। धार के ध्रुवपद गायक देवजी बुवा ने अपनी ध्रुवपद गायन परम्परा को उदार प्रवृत्ति से अपने शिष्यों में बाँटकर धार की सांगीतिक विरासत में अपना योगदान दिया। धार के श्रीलालजीबुवा, श्रीदत्तात्रय बलवन्तदीक्षित, शंकररावपुरकर, धोन्डूभैया आदि भी अपने समय के सर्वश्रेष्ठ ध्रुपद गायक थे। धार के श्रीलालजीबुवा ध्रुवपद गायन के लिए प्रसिद्ध थे। यह ध्रुवपद के अतिरिक्त धमार, ख्याल, कजरी, टप्पा आदि गाते थे। धार के श्रीदत्तात्रय बलवन्तदीक्षित इनके शिष्य थे। श्रीदत्तात्रय बलवन्तदीक्षित ध्रुवपद गायक थे। इन्होंने ध्रुवपद गायन के अतिरिक्त कई बन्दिशों की भी रचना की। उज्जैन के श्री केशवनारायण आप्टे बचपन से ही संगीत में रूची रखते थे। श्री केशवनारायण आप्टे ध्रुवपद, प्रबन्ध, तराना में जयदेव कवि रचित अष्टपदी तथा सूरदास के भजन आदि गाते थे। इन्दौर के श्रीकैलाश पवार तथा सुखदेव पवार की जोड़ी ध्रुवपद गायन के क्षेत्र में 'पवारबन्धु' के नाम से प्रसिद्ध है। पवार बन्धु आकाशवाणी के ए ग्रेड कलाकार है। इनके ध्रुवपदगायन के कार्यक्रम दूरदर्शन पर प्रसारित होते रहते हैं। श्री उमाकान्त तथा रमाकान्त गुन्देजा की जोड़ी 'गुन्देजाबन्धु' के नाम से जानी जाती है। यह सर्वश्रेष्ठ ध्रुवपद गायक है तथा ध्रुवपद के विकास कार्य में सतत संलग्न है। इन्होंने 'ध्रुपदकेन्द्र', भोपाल से उस्ताद जियाफरीउद्दीन डागर और मोइउद्दीन डागर से ध्रुवपद शिक्षा ग्रहण की तथा मध्यप्रदेश को गौरवान्वित किया।

वर्तमान में ध्रुवपद गायन शैली का बेड़ा मध्यप्रदेश के सर्वश्रेष्ठ 'डागरबन्धु', 'गुन्देजाबन्धु', 'पंवारबन्धु' आदि ध्रुवपद गायकों ने भली-भाँति सम्भाला हुआ है। मध्यप्रदेश की धरोहर ध्रुवपद गायन शैली को सहेजने के लिए राज्य शासन, निरंतर प्रयास कर रही है। मध्यप्रदेश सरकार इसे सहेजने के लिए 1981 से ध्रुवपद समारोह आयोजित कर रही है, यहाँ 1982 में 'डागरसप्तक', 1983 में 'धमारसमारोह', 1981-85 में अन्य ध्रुपद समारोह आयोजित किए गए। 'डागरबन्धु' के प्रयासों से विभिन्न ध्रुवपद संस्थाओं का निर्माण हुआ तथा देश-विदेश में समय-समय पर ध्रुवपद समारोह आयोजित किये जाते है। इन्दौर के पवार बन्धुओं के ध्रुवपद कला केन्द्र द्वारा 1985 से इन्दौर में 'चुन्नीलाल पंवार स्मृति समारोह' के नाम से ध्रुवपद समारोह आयोजित किया जाता है। देश का सर्वश्रेष्ठ संगीत समारोह ग्वालियर में 'तानसेन समारोह' के नाम से आयोजित किया जाता है। विदेशों में भी इसका प्रचार-प्रसार बढ़ा है। ध्रुवपद गायकों ने विभिन्न देशों में अपना प्रदर्शन दिया तथा कार्यशालाएं की एवं विदेशी छात्रों को ध्रुवपद के क्रियात्मक व तकनीकी पक्ष की जानकारी दी। डागर बन्धुओं ने अमेरिका, यूरोप, यू.के. विश्वविद्यालयों में वर्कशॉप की। 1977 में जियाफरीदुद्दीनखां डागर ने ऑस्ट्रेलिया की डरहम यूनिवर्सिटी में 'ओरिएन्टल म्यूज़िक फ़ेस्टीवल' में प्रस्तुति दी। ''ध्रुवपद के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक प्रयास भी उल्लेखनीय है कि सन् 1982 में प्रसिद्ध फिल्म-निर्देशक मणिकौल द्वारा ध्रुवपद फिल्म बनाई गई, जिसमें डागर घराने के उ. जियामोहियुद्दीन व उ. जियाफरीदुद्दीन डागर आदि को चित्रांकित करने के साथ ध्रुपद के सम्पूर्ण परिपेक्ष्य को फिल्माया गया है, यह फिल्म ध्रुवपद व कलाकार की कला के संरक्षण व ध्रुवपद एवं जन साधारण की संबद्धता के साथ भारतीय संस्कृति की इस विधा के प्रोत्साहन व परिचय की दृष्टि से बहुमूल्य प्रयास है।''[10]

शिक्षा की दृष्टि से वर्तमान में कई महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संगीत विभाग में घरानों के उस्तादों द्वारा ध्रुवपद सिखाया जाता है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा सितम्बर 1981 में भोपाल में स्थापित अलाउद्दीन संगीत अकादमी में 'ध्रुवपद केन्द्र' की स्थापना की गई। पंवारबन्धु द्वारा इन्दौर में 'ध्रुवपद संस्थान' की स्थापना की गई। संगीत को संरक्षण एवं प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से ग्वालियर में राजा मानसिंह तोमर कला केन्द्र की स्थापना की गई। आज देश-विदेश से शिष्य ध्रुवपद विधा ग्रहण करने इन संस्थानों में आते हैं। इस सभी प्रयासों से देश-विदेश में ध्रुवपद का प्रचार-प्रसार निरंत रही बढ़ रहा है।

पाद-टिप्पणियाँ

1. तैलंग, मधुभट्ट, ध्रुपद गायन परम्परा, पृ. 14
2. यजुर्वेदी, सुलोचना, आचार्य बृहस्पति, खुसरो,तानसेन तथा अन्य कलाकार, पृ. 68
3. बांगरे, अरुण, ग्वालियर की संगीत परम्परा, पृ. 76
4. टेलर, शर्मिला, मालवा में ध्रुपद शैली की परम्परा, पृ. 52
5. बृहस्पति, आचार्य, मुसलमान और भारतीय संगीत पृ. 73
6. टेलर, शर्मिला, मालवा में ध्रुपद शैली की परम्परा, पृ. 56
7. चौबे, सुशील कुमार, हमारा आधुनिक संगीत, पृ. 36
8. धारकर, गोविंद, ध्रुवपद की वाणियाँ, संगीत कला विहार, पृ. 37
9. गोस्वामी, हरिकिशन, भारतीय संगीत की परम्परा, पृ. 31
10. तैलंग, मधुभट्ट, ध्रुपद गायन परम्परा, पृ. 165

संदर्भ ग्रन्थ सूची

गोस्वामी, हरिकिशन, भारतीय संगीत की परम्परा, दिल्ली, कनिष्क पब्लिशर्स, 2004

चौबे, सुशील कुमार, हमारा आधुनिक संगीत, उ.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1975

टेलर, शर्मिला, मालवा में ध्रुपद शैली की परम्परा, निवई, नवजीवन पब्लिकेशन्स, 2006

तैलंग, मधुभट्ट, ध्रुपद गायन परम्परा, जयपुर, जवाहर कला केन्द्र, 1995

बांगरे ,अरुण, ग्वालियर की संगीत परम्परा, दिल्ली कनिष्क पब्लिशर्स, 2002

बृहस्पति, आचार्य, यजुर्वेदी सुलोचना, खुसरो तानसेन और अन्य कलाकार, नई दिल्ली, राजकमल 1976

बृहस्पति, आचार्य, मुसलमान और भारतीय संगीत, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1974

धारकर, गोविंद, ध्रुवपद की वाणियाँ, संगीत कला विहार, 1984ह्य